ऊँचे टीले पर शेरशाह ने इस मकबरे का निर्माण स्वयं करवाया था। यह मकबरा हिंदु एवं मुस्लिम की एकता का प्रतीक है।

2. पुराना किला – हुमायूं द्वारा निर्मित 'दीनपनाह' को तुड़वाकर उसके ध्वंसावशेषों पर दिल्ली में पुराने किले का निर्माण कराया तथा किले के अंदर 'किला-ए-कुहना' नामक मस्जिद का निर्माण कराया।

3. कन्नौज के पास शेरसूर नामक नगर बसाया।

झेलम के तट पर रोहतासगढ़ के दुर्ग का निर्माण कराया। शेरशाह ने ही पाटलिपुत्र को पटना नाम दिया।

शेरशाह ने अपने शासनकाल के दौरान सोने, चांदी एवं तांबे के सिक्के जारी किये। इसपर अरबी लेखों के साथ सुल्तान का नाम लिखा होता था। शेरशाह ने ही सर्वप्रथम चांदी का रुपया जारी किया, जो 178 ग्रेन का होता था। उसका तांबे का दाम 380 ग्रेन का होता था।

निष्कर्ष: यह कहा जा सकता है कि शेरशाह ने अपने शासनकाल के दौरान अपने प्रशासनिक क्षमता के साथ-साथ सार्वजनिक कल्याण के भी कार्य किये, जिसके कारण तत्कालीन इतिहासकारों ने उसे महान शासकों की श्रेणी में रखा है। शायद इसी लिए शेरशाह के शासनकाल को देखकर इतिहासकार स्मिथ ने लिखा है, "यदि शेरशाह कुछ समय तक और बचा रहता तो इतिहास के रंगमंच पर महान मुगलों का आगमन न होता।"

शेरशाह की मृत्यु के बाद इस्लामशाह फिरोजशाह तथा मुहम्मद आदिलशाह दिल्ली की गद्दी पर बैठे। इसके बाद पुनः हुमायूं ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। हुमायूं की मृत्यु के बाद अकबर मुगल शासक बना।

Rajesh Kr. Singh.
Asst. Professor, D.S.P.M.U.

शिकदार - यह एक सैनिक अधिकारी था। इसका मुख्य कार्य अपने क्षेत्र में शांति और व्यवस्था बनाये रखना था और आवश्यकता होने पर राज्य प्रशासन को सैन्य सहायता प्रदान करना था।

कोतवाल - यह एक प्रकार से कोषाध्यक्ष का कार्य करता था।

कानूनगो - यह एक प्रकार से लेखपाल का काम करता था। यह संख्या में दो होते थे। प्रत्येक परगने में बहुत से गाँव होते थे। गाँव शासन की सबसे छोटी इकाई थी। प्रत्येक ग्राम में एक पटवारी, एक मुखिया तथा एक चौधरी होता था। प्रत्येक ग्राम में एक पंचायत होती थी। इसके सदस्य गाँव के वृद्ध लोग होते थे। यह स्थानीय गाँव के झगड़ों का निपटारा करती थी।

शेरशाह की भू-राजस्व व्यवस्था

यह शेरशाह के प्रशासन की सबसे बड़ी विशेषता थी। शेरशाह ने अपने राज्य के समस्त भूमि की माप करवाई। भूमि को तीन भागों में बांटा गया। अच्छी, औसत एवं खराब। माप का आधार बीघा माना गया। शेरशाह ने उपज के आधार पर भू-राजस्व तय किया।

सार्वजनिक कार्य

- **सड़कों का निर्माण** - शेरशाह को लगभग 1700 सड़कों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। इनमें ग्रांट-ट्रंक रोड का निर्माण करवाया। यह बंगाल के सोनार गाँव से सिन्धु नदी तक जाती थी। शेरशाह ने अपने शासनकाल में कई सरायों एवं मठों का निर्माण कराया। शेरशाह ने डाकु-व्यवस्था को भी सुव्यवस्थित करने का कार्य किया।

शेरशाह के शासन में स्थापत्य कला

- **शेरशाह का मकबरा** - बिहार के सासाराम में एक झील के अंदर

- दीवान - ए - वजारत (अर्थ विभाग) - वजीर वित्त विभाग का प्रमुख होता था। सुल्तान के बाद पूरे साम्राज्य का यह सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता था। यह साम्राज्य की वित्त व्यवस्था की देख-रेख करता था।

- दीवान - ए - रसालत - यह वैदेशिक विभाग था। यह विभाग दूसरे राज्यों से संबंधों के लिए उत्तरदायी होता था, साथ ही सरकारी या राज्य के सभी पत्र-व्यवहार इसी विभाग के माध्यम से होते थे।

- दीवान - ए - इंशा (सामान्य प्रशासन) — इस विभाग का मुख्य कार्य राज्य की घोषणाओं और राज्यादेशों को राज्य के रिकार्ड में रखना और उन्हें लिपिबद्ध करना था।

- दीवान - ए - काजा - (न्याय विभाग) — इस विभाग का अध्यक्ष मुख्य काजी था। यह एक प्रकार से न्यायाधीश था, तथा प्रांतीय काजियों की अपीलों पर सुनवाई करता था।

- दीवान - ए - बारीद (गुप्तचर विभाग) - इस विभाग का अध्यक्ष बारिद-ए-ममालिक कहलाता था। इसका कार्य अपने गुप्तचरों के माध्यम से राज्य की समस्त घटनाओं से सुल्तान को अवगत कराना था।

प्रांतीय शासन

प्रशासनिक कुशलता के लिए शेरशाह ने अपने संपूर्ण राज्य को 47 भागों को विभक्त किया था। इन प्रान्त अथवा सरकार कहा जाता था। प्रत्येक प्रांत का अधिकारी सूबेदार कहलाता था। प्रत्येक प्रांत कई जिलों में विभक्त था। जिनमें प्रमुख शिकदार तथा प्रमुख मुंसी होते थे। प्रमुख शिकदार का कार्य अपने जिले में शांति - व्यवस्था बनाये रखना होता था। page-2

प्रत्येक सरकार के अंतर्गत कई परगने होते थे। जिनकी संख्या हजारों में थी। प्रत्येक परगने में निम्न पदाधिकारी होते थे।

Scanned with CamScanner

'शेरशाह का प्रारंभिक जीवन / प्रशासनिक संगठन / सार्वजनिक सुधार'

B.A-Part II - Paper - 9th - Guess Question - (3)

Posted on - 24 April 2020

सूर साम्राज्य के संस्थापक शेरशाह सूरी का जन्म 1486 ई० में हुआ था। शेरशाह के बाल्यकाल का नाम फरीद था। शेरशाह ने 1540 ई० में मुगल शासक हुमायूं को पराजित कर उत्तर भारत में सूर वंश या सूर साम्राज्य की स्थापना की थी। शेरशाह ने पहले बाबर के लिए एक सैनिक का कार्य किया था, बाबर ने उसे प्रारंभ में सेनापति और फिर बिहार का गवर्नर नियुक्त किया। 1537 में जब हुमायूं किसी अभियान पर था, तब शेरशाह ने बंगाल पर कब्जा किया। सन् 1539 में शेरशाह और हुमायूं के मध्य चौसा की लड़ाई में शेरशाह को सफलता प्राप्त हुई। 1540 ई० में शेरशाह ने हुमायूं को पुनः पराजित कर, शेर खान की उपाधि धारण की और संपूर्ण उत्तर भारत पर सूर वंश का साम्राज्य स्थापित कर दिया।

शेरशाह की शासन व्यवस्था काफी प्रभावशाली थी, और उसकी शासन व्यवस्था की कई बातों को अकबर ने भी ग्रहण किया था। इसलिए उसे 'अकबर का अग्रगामी' भी कहा जाता है।

शेरशाह की प्रशासनिक व्यवस्था

(1) **केंद्रीय शासन** → सुल्तान केंद्रीय सत्ता या शासन का प्रधान था। निरंकुश होते हुए भी वह अपनी प्रजा को अपने संतान की भाँति समझता था, योग्य होते हुये भी शेरशाह ने अपने विशाल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के लिए कई मंत्रालय की स्थापना की थी। ये विभाग इस प्रकार थे:—

Pg-1

- **दीवान-ए-आरिज** (सैन्य एवं युद्ध विभाग) – इस विभाग का प्रधान 'आरिज-ए-मुमालिक' कहलाता था। वह सैनिकों की भर्ती के साथ पूरे सेना के प्रशासन ~~कू~~ व वेतन आदि की देख रेख करता था।